अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2025) दिनांक : 20.12.2025

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भिक्षु दृष्टांत–30

प्र. 1 कोई बारह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दीजिए– 12

(क) 'साधु आहार करता है, वह अव्रत और प्रमाद है' यह कथन किसने कहा? क्या यह सही है?

(ख) 'नाथो गण से अलग हो गया' इस पर आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?

(ग) आचार्य जयमल जी के सोलह साधु किन बातों के लिए अलग हुए?

(घ) आचार्य भिक्षु के अनुसार रात किसको बड़ी लगती है?

(ड़) 'तुमने श्रावक और कसाई को समान गिन लिया' यह बात आचार्य भिक्षु को किसने कही और आचार्य भिक्षु ने क्या प्रत्युत्तर दिया?

(च) 'एक महाव्रत के खण्डित हो जाने पर पांचों ही महाव्रत खण्डित हो जाते हैं' इसके लिए आचार्य भिक्षु ने किसका दृष्टांत दिया?

(छ) मेरणियां कौन है? उनके प्रति किसको मोह हो गया?

(ज) कालवादी सिद्ध जीवों में कितनी आत्मा बतलाते हैं?

(झ) मायाराम जी को नव पदार्थ में क्या शंका थी जिसे आचार्य भिक्षु ने किस सूत्र के आधार में समाहित किया?

(ञ) पोतियाबंध मत के साधु कपूर जी ने श्राविकाओं से क्षमा-याचना किस प्रकार की?

(ट) ठाकुर मोखम सिंह की पीढ़ियों के नाम और उनकी पुरानी बातें कहां लिखी हुई है?

(ठ) आचार्य भिक्षु ने साधुओं के लिए विगय खाने की मर्यादा कब और क्यों की?

(ड) आचार्य भिक्षु के अनुसार दोनों लोक किसके बिगड़ते हैं?

(ढ) 'टोपसी' किसे कहते हैं? इस पर आचार्य भिक्षु ने क्या रचना की?

प्र. 2 किसी एक घटना प्रसंग को 100 से 150 शब्दों में लिखें– 6

(क) पौषध में प्रतिलेखन क्यों?

(ख) उपकार : संसार का या मोक्ष का?

(ग) यह शोभाचंद सेवक निष्पक्ष (छन्द को छोड़ दें)

प्र. 3 कोई तीन दृष्टांतों द्वारा सिद्ध करें कि आचार्य भिक्षु ने मिश्र धर्म की मान्यता पर प्रहार किया। 12

अथवा

हेमजी स्वामी के वैराग्य एवं दीक्षा से सम्बन्धित दृष्टांतों को संक्षेप में लिखें।

तेरापंथ की साध्वीप्रमुखाएं–30

प्र. 4 कोई सात प्रश्नों के एक या दो वाक्य में उत्तर दीजिए– 7

(क) आचार्य तुलसी के पद पर प्रतिष्ठित होने पर साध्वी लाडांजी ने अपने भ्राता के दर्शन कहां किये और आचार्य तुलसी ने उन्हें क्या बख्सीस की?

(ख) साध्वीप्रमुखा लाडांजी दक्षिण यात्रा में क्यों नहीं गई?

(ग) 'क्या आपको लोगों का डर है?' साध्वीप्रमुखा लाडांजी ने इस प्रश्न का क्या उत्तर दिया?

(घ) एक अरबी ज्योतिषी ने 'कला' की कुण्डली देख कर पिता सूरजमल जी को क्या बताया?

(ड़) मुमुक्षु कला को प्रतिक्रमण सीखने का उपदेश कहां मिला? उस जगह की क्या विशेषता है?

(च) साध्वी कनकप्रभा ने कौन सी पत्रिका का सम्पादन किया? वह किस भाषा में थी?

(छ) साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी को असाधारण साध्वीप्रमुखा का सम्बोधन कब और कहां मिला?

(ज) बहन सरोज ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश कब किया? वहां उनका क्या नाम था?

(झ) 'तुम साध्वी बनने के बाद क्या करना चाहोगी?' युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के इस प्रश्न का समणी स्मितप्रज्ञा जी ने क्या जवाब दिया?

प्र. 5 कोई दो प्रश्नों के उत्तर दो या तीन वाक्य में दीजिए– 5

(क) मुमक्षु सरोज की शैक्षणिक योग्यता बतायें।

(ख) आचार्य तुलसी ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को संघ की महानिदेशिका के रूप में नियुक्त करते हुए उनकी किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया?

(ग) साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी को कौन-कौन से हिन्दी पद्यात्मक ग्रन्थ कंठस्थ थे?

(घ) साध्वी समाज की नई व्यवस्था हेतु आचार्य तुलसी ने कितने व कौन से विभाग किये तथा उनमें किन साध्वियों को जोड़ा?

प्र. 6 कोई तीन प्रश्नों के उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 18

(क) नारी जागरण में साध्वीप्रमुखा लाडांजी के योगदान पर प्रकाश डालें।

(ख) सिद्ध करें कि साध्वीप्रमुखा लाडांजी में व्यक्तित्व निर्माण की कला थी।

(ग) साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी के अनुत्तर खाद्य संयम पर प्रकाश डालें।

(घ) सिद्ध करें कि साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी तेरापंथ की मदर टेरेसा थी?

(ड़) साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी की साध्वीप्रमुखा पद पर नियुक्ति का वर्णन करें।

अनुकंपा की चौपाई–30

प्र. 7 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 5

(क) सूत्र में भगवान ने तीन रत्न किसे कहा है?

(ख) जिनेश्वर देव ने दया किसे कहा है?

(ग) मिश्र क्रिया किसे कहते हैं?

(घ) परिग्रह कितने प्रकार के हैं और वे कौन से व्रत में हैं?

(ड़) भगवान महावीर की प्रथम देशना निष्फल क्यों हुई?

(च) छद्मस्थ तीर्थंकर साधु अवस्था में धर्मकथा प्रवचन नहीं करते? इसका वर्णन कौन से सूत्र में कहां आया है?

प्र. 8 छद्मस्थ की क्या पहचान है? छद्मस्थ अवस्था में तीर्थंकर के कितने कर्म लगते हैं और वे कोई सावद्य कार्य करते हैं उसका क्या कारण है? 10

अथवा

ढाल आठ में आचार्य भिक्षु ने वेशधारी साधुओं का क्या वर्णन किया है?

प्र. 9 कोई दो पद्यों की सप्रसंग व्याख्या करें– 15

(क) एक दोय बोलां में मिश्र कहे, सगलां में हो कहितां लाजें मूढ।
एहवो उलटो पंथ झालीयो, त्यारे केडे हो तांणें मूर्ख रूढ़।।

(ख) भगवंते मोटा मोटा राजवी, प्रतिबोध्या हो आंण्या भारग ठाय।
साध श्रावक धर्म बतावीयो, न सीखायो हो पडहो फेरणो ताय।।

(ग) केइ कहे साध जीव बचावे, राखे रखावे भलो जांणे जी।
ते जिण मारग रा अजांण अग्यांनी, इसडी चरचा आंणें जी।।

(घ) धर्म हुवे तो सगला मिनखां तणें, रतनां जड़्या कर दे महल जी।
ते पिण थोड़ा में नीपजाय दे, देवता नें करतां सहल जी।।

भिक्षु वाणी–10

प्र. 10 कोई तीन पद्य लिखें– 10

(क) पुरूषार्थ।

(ख) दवरो दाधो.....हुवें ताहि।।

(ग) वीतराग धर्म।

(घ) जे सूर करें.....सुधारियो।।

(ड़) सूइ नाकें.....न वेसें।।